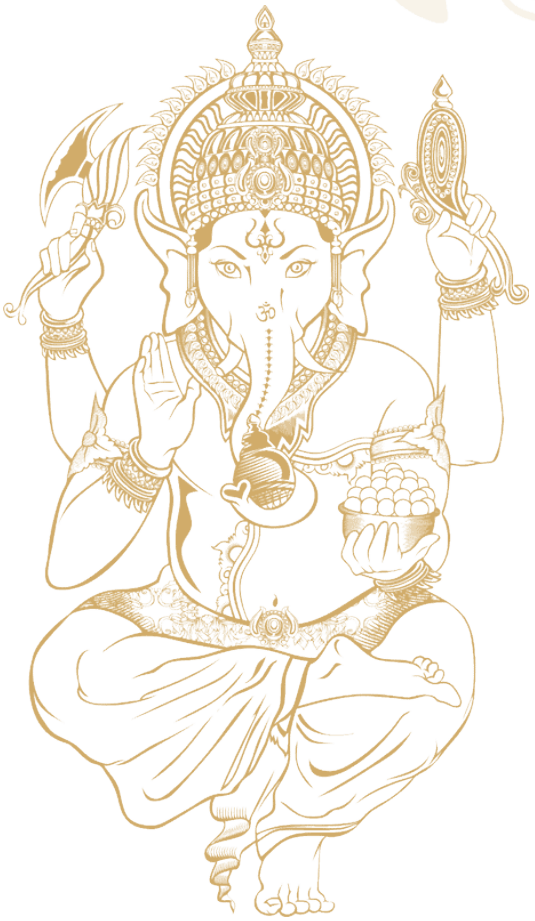

diya

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121189201

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121189201 Date: 06/02/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
10/05/1996	जन्म तिथि	11/10/2026
शुक्रवार	दिन	रविवार
घंटे 08:02:00	जन्म समय	19:10:00 घंटे
घटी 06:18:27	जन्म समय(घटी)	31:57:41 घटी
India	देश	India
Bilaspur	स्थान	Bilaspur
31:18:00 उत्तर	अक्षांश	31:18:00 उत्तर
76:48:00 पूर्व	रेखांश	76:48:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:22:48	स्थानिक संस्कार	-00:22:48 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:30:37	सूर्योदय	06:22:55
19:08:14	सूर्यास्त	17:55:51
23:48:26	चित्रपक्षीय अयनांश	24:14:00

मिथुन	लग्न	मेष
बुध	लग्न लग्नाधिपति	मंगल
मकर	राशि	तुला
शनि	राशि-स्वामी	शुक्र
धनिष्ठा	नक्षत्र	चित्रा
मंगल	नक्षत्र स्वामी	मंगल
1	चरण	4
ब्रह्म	योग	वैधृति
बालव	करण	बव
गा-गगन	जन्म नामाक्षर	री-रीतिका
वृष	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	तुला
वैश्य	वर्ण	शूद्र
जलचर	वश्य	मानव
सिंह	योनि	व्याघ्र
राक्षस	गण	राक्षस
मध्य	नाड़ी	मध्य
मार्जार	वर्ग	मृग

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
मंगल 6वर्ष 4मा 14दि		04:35:18	मिथु	लग्न	मेष	20:22:48	मंगल 0वर्ष 11मा 9दि	
गुरु		25:54:44	मेष	सूर्य	कन्या	24:01:38	मंगल	
23/09/2020		24:31:38	मक	चंद्र	तुला	04:52:12	11/10/2026	
23/09/2036		11:41:41	मेष	मंगल	कर्क	13:29:52	21/09/2027	
गुरु	11/11/2022	03:21:03	वृष व	बुध	तुला	19:01:18		00/00/0000
शनि	25/05/2025	23:48:05	धनु व	गुरु	कर्क	27:10:01		00/00/0000
बुध	31/08/2027	02:36:44	मिथु	शुक्र व	तुला	12:54:37		00/00/0000
केतु	05/08/2028	09:49:37	मीन	शनि व	मीन	16:30:59		00/00/0000
शुक्र	06/04/2031	22:53:49	कन्या व	राहु व	कुंभ	04:31:34		00/00/0000
सूर्य	24/01/2032	22:53:49	मीन व	केतु व	सिंह	04:31:34		11/10/2026
चन्द्र	25/05/2033	10:46:34	मक व	हर्ष व	वृष	11:04:26	शुक्र	15/10/2026
मंगल	01/05/2034	03:54:56	मक व	नेप व	मीन	08:20:30	सूर्य	20/02/2027
राहु	23/09/2036	08:16:28	वृश्चि व	प्लूटो व	मक	08:50:24	चन्द्र	21/09/2027

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:48:26 चित्रपक्षीय अयनांश 24:14:00

लग्न-चलित

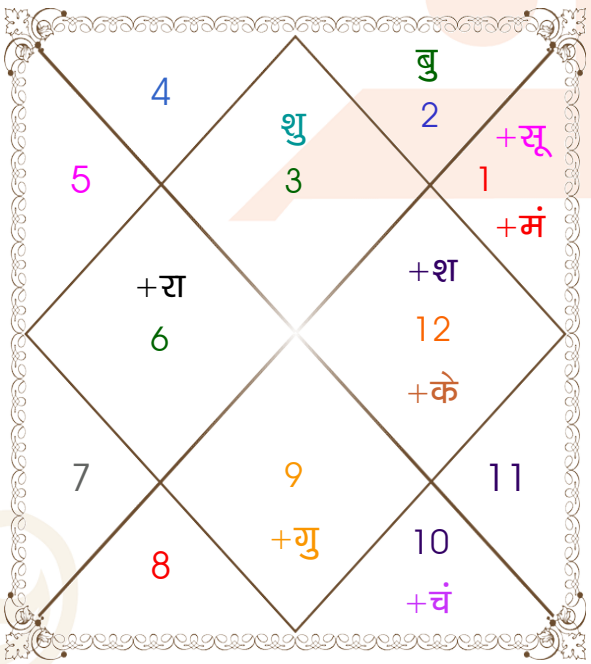

लग्न-चलित

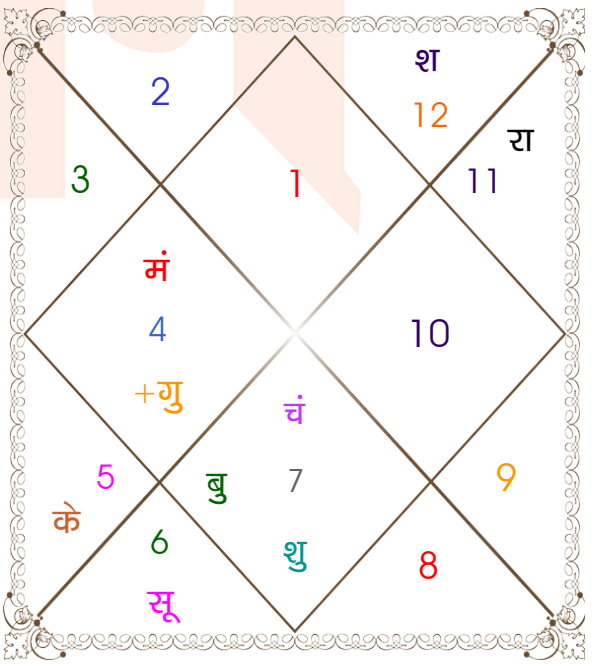

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	सिंह	व्याघ्र	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शनि	शुक्र	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मकर	तुला	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	मध्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	25.00		

कुल : **25 / 36**

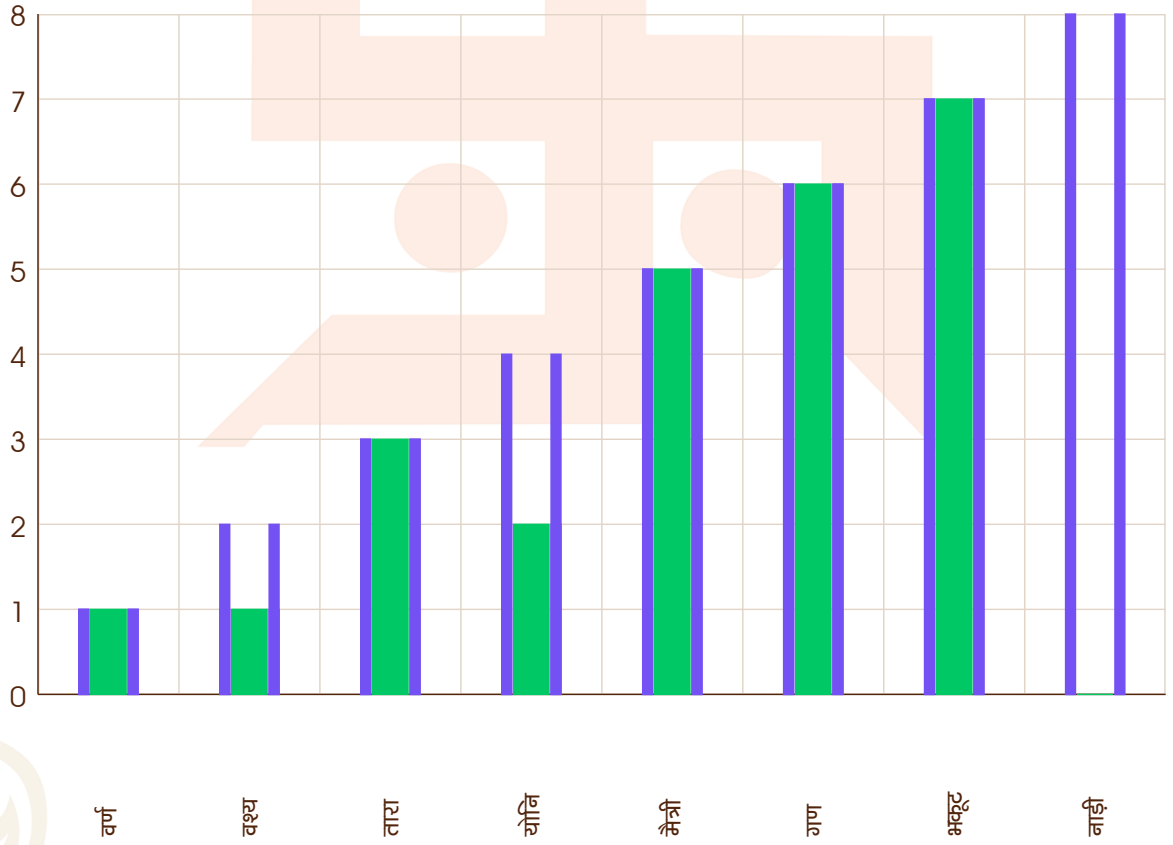

अष्टकूट मिलान

नाड़ी दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के नक्षत्र एवं राशियां भिन्न-2 है।

। का वर्ग मार्जार है तथा diya का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर ।म है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार । और diya का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

। मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

diya मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

चतु: सप्तमे भौमो मेषकर्कटे निग्रहः।
कुजदोषो न विद्यते।।

अर्थात् चतुर्थ तथा ।प्तम भाव में यदि मेष या कर्क का मंगल हो तो कुजदोष ।माप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल diya कि कुण्डली में चतुर्थ भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

ढप्ध्;थ्डत्मजतवह;0द्धझ0द्धझ क्योंकि मंगल diya कि कुण्डली में वक्री है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु diya कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु । कि कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट

जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में। एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष ।माप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल। कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

। तथा diya में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

। का वर्ण वैश्य है तथा diya का वर्ण शूद्र है। इसमें diya का वर्ण । के वर्ण ो नीचा है अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके फलस्वरूप diya अति आज्ञाकारी, ।हायता करने वाली तथा बिना किसी शिकायत के पूरे परिवार की ेवा-सुश्रुषा एवं देखभाल करने वाली होगी। ।थ ही हर किसी की ेवा के लिए diya हमेशा तत्पर रहेगी। बिना उचित कारण के वह किसी के ।थ तर्क-वितर्क अथवा झगड़ा नहीं करेगी।

वश्य

। का वश्य जलचर है एवं diya का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है। जिसके कारण यह मिलान मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जलचर कभी भी मनुष्य के ऊपर नियंत्रण स्थापित नहीं कर ।कता। इसके विपरीत, मनुष्य या तो जलचरों पर नियंत्रण कर लेता है अथवा उसे ।माप्त कर देता है अथवा उसका भक्षण कर लेता है अथवा उससे दूर भागता है। अतः यदि इन दोनों बीच विवाह ।म्पन्न होता है तो यह अनुकूल नहीं रहेगा। इ। स्थिति में diya अति हावी होती रहेगी तथा हमेशा अपने पति को गुलाम ।मझती रहेगी तथा चाहेगी कि। उसकी आज्ञा का पालन करे। इससे घर की शांति भंग होगी तथा प्रगति एवं ।मृद्धि पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

तारा

। की तारा जन्म तथा diya की तारा भी जन्म है। अतः ।मान तारा होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों में अगाध प्रेम, ।हयोग आपसी विश्वा। तथा ।मझदारी की भावना बनी रहेगी। ।थ ही दोनों एक-दूसरे के विश्वा। पात्र बने रहेंगे तथा पूर्ण ।क्षमता ो मिलकर पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करते रहेंगे। इनकी ंतान बुद्धिमान, कर्त्तव्यपरायण तथा ।फल होगी।

योनि

। की योनि सिंह है तथा diya की योनि व्याघ्र है। अर्थात दोनों की योनि ।मान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात ।म ंबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी ।मझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में ।हयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह ।कता है। ।थ ही दोनों के बीच अविश्वा। की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को ंदेह की भावना ो देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी ।मझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो ।कते हैं। ंभव है कि दोनों के बीच अवैध ंबंध को लेकर ंदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो ।कता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो ।कता है। वर या कन्या में ो कोई भी

विश्वासघात भी कर ।कता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो ।कता है। इनको अपने जीवन में अत्याधिक ।घर्ष के उपरांत ही ।फलता प्राप्त होगी अतः कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में ।फलता कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की ।भावना है। जिसके कारण दोनों को ।मय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के ोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमां। एवं ेक में रुचि की कमी भी रह ।कती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण ।मय-समय पर धन हानि भी हो ।कती है। आप। में प्रेम एवं ौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इ। प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न ।मान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में । एवं diya दोनों के राशि स्वामी परस्पर मित्र हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार े। अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि े। यदि । एवं diya के राशिस्वामी परस्पर मित्र होने के कारण इसे अति उत्तम मिलान माना जाता है। जिसके कारण । एवं diya जीवन की हर खुशी एवं ुख प्राप्त करने में ।फल होंगे तथा इनमें परस्पर विश्वास, प्रेम, ।मझ एवं ।हयोग की भावना बनी रहेगी। ।थ ही हर प्रकार की ुख-सुविधाओं एवं वैभव े। परिपूर्ण होंगे।

गण

। का गण राक्ष। है तथा diya का गण भी राक्ष। है। अर्थात diya का गण । के गण के ।मान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण । एवं diya दोनों के स्वभाव, विचार तथा पसंद-नापसंद एक जैसे होंगे। यद्यपि कि दोनों के स्वभाव क्रूर, निष्ठुर एवं असंवेदनशील होंगे किंतु फिर भी एक-दूसरे के लिए ये अति अनुकूल एवं आदर्श ।बित होंगे।

भकूट

। से diya की राशि दशम भाव में स्थित है तथा diya से । की राशि चतुर्थ भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण । एक पारिवारिक व्यक्ति होंगे तथा अपनी पत्नी एवं बच्चों ।मेत परिवार के हर ।दस्य की देखभाल करेंगे। उन्हें अपने ।बंधियों े ही खुशी प्राप्त होगी तथा उनकी पत्नी ।दैव कर्त्तव्यों के निर्वहन में उनकी मदद करती रहेंगी। diya को घर, वाहन, मां का प्यार ।मेत जीवन में हर ुख एवं खुशी प्राप्त होगी। diya हमेशा अपने पति की परछाईं बनकर ।दैव उनकी ।हायता करती रहेंगी।

नाड़ी

। की नाड़ी मध्य है तथा diya की नाड़ी भी मध्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी

समान हैं, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि॰ दोषपूर्ण है। अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। यदि पति-पत्नी की ।मान नाड़ी मध्य ही होगी तो पति अथवा पत्नी में॰ किसी की मृत्यु की ।भावना होती है। ऐसी स्थिति में । एवं diya का विवाह अति घातक हो ।कता है। आपकी ।तान कमजोर, डरपोक, मानसिक रूप॰ असंतुलित, मानसिक बीमारी॰ ग्रस्त हो ।कती हैं। अतः ऐसा विवाह पूर्णतः त्याज्य है।

मेलापक फलित

स्वभाव

l की जन्मराशि भूमितत्व युक्त मकर तथा diya की राशि वायुतत्व युक्त तुला राशि है। भूमि और वायु में नैसर्गिक विषमता होने के कारण यद्यपि इनमें स्वभावगत विषमताएं विद्यमान रहेंगी परन्तु lामंजस्य तथा बुद्धिमताेl अनुकूल lबंध बनाने में lहायता प्राप्त हो lकती है। अतः यह मिलान lामान्येl अच्छा रहेगा।

l की राशि का स्वामी शनि तथा diya की राशि का स्वामी शुक्र परस्पर मित्र भाव में पड़ती हैं अतः इसके प्रभावेl दोनों के मध्य मधुरता रहेगी तथा एक दूसरे के लिए मन में प्रेम lहयोग तथा lमर्पण का भाव रहेगा। वे lुख दुख में एक दूसरे को पूर्ण lहयोग प्रदान करेंगे। l और diya परस्पर गुणों की प्रशंसा तथा lच्चे मित्र की भांति अव गुणों की उपेक्षा करेंगे। इससे जीवन lुखमय रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति त्याग की भावना विद्यमान होगी।

l और diya की राशियां परस्पर दशम तथा चतुर्थ भाव में पड़ती हैं शास्त्रानुसार यह शुभ भकूट माना जाता है। अतः इसके प्रभावेl दोनों एक दूसरे के लिए lौभाग्यशाली सिद्ध होंगे तथा जीवन में भौतिक lुख lाधनों को अर्जित करके lुखपूर्वक उनका उपभोग करेंगे। वे एक दूसरे के अस्तित्व को lम्मान प्रदान करेंगे एवं किसी के भी मामले में हस्तक्षेप नहीं करेंगे। फलतः आपl में विश्वाl का भाव रहेगा एवं प्रसन्नतापूर्वक दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में lमर्थ होंगे।

l का वश्य जलचर तथा diya का वश्य मानव है। मानव तथा जलचर में नैसर्गिक विषमता होने के कारण इनकी अभिरूचियों में अन्तर रहेगा तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी आवश्यकताओं में भी अन्तर रहेगा। lाथ ही दाम्पत्य lबंधों में एक दूसरे को प्रसन्न एवं lन्तुष्ट करने में कम ही lफल होंगे।

l का वर्ण वैश्य तथा diya का वर्ण शूद्र है। अतः l की प्रवृति धनार्जन में अधिक रहेगी तथा धन को विशेष महत्व देंगे। लेकिन diya किसी भी कार्य को परिश्रम तथा ईमानदारीेl lम्पन्न करेंगी फलतः कार्य क्षेत्र की उन्नति lन्तोषप्रद रहेगी।

धन

l और diya का जन्म एक ही तारा 'जनम' में हुआ है। अतः इसके शुभ प्रभावेl इनकी आर्थिक स्थिति lुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में lमर्थ होंगे। lाथ ही भकूट एवं मंगल का प्रभाव भी आर्थिक स्थिति पर lामान्य ही रहेगा। अतः अपने वर्तमान lोतोंेl परिश्रम पूर्वक धनऐश्वर्य की प्राप्ति होती रहेगी जिससे लाभ मार्ग lामान्यतया प्रशस्त होंगे तथा आर्थिक स्थितिेl l और diya सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

l को पैतृक lम्पति तथा जायदाद की प्राप्ति होगी। अतः आजीवन वे धन धान्येl युक्त रहेंगे तथा अपनी प्रतिभा, योग्यता एवं परिश्रम ेl उसमें उतरोत्तर वृद्धि करने में lमर्थ

होंगे । इ। प्रकार भौतिक ुख ाधनों का उपभोग करते हुए वे अपना मय आनंद पूर्वक व्यतीत करेंगे।

स्वास्थ्य

। और diya दोनों मध्य नाड़ी में उत्पन्न हुए है अतः नाड़ी दोष े। ये प्रभावित होंगे। इसके प्रभाव े। इनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा मय मय पर शारीरिक दुर्बलता का आभा। होगा। ाथ ही। के लिए मंगल भी अशुभ रहेगा जिससे वे रक्त या पित बधी कष्ट प्राप्त करेंगे तथा हृदय बधी परेशानी भी होगी इसके अतिरिक्त धातु या गुप्त रोगों की भावना भी हो कती है। इससे परस्पर बंधों में तनाव उत्पन्न होगा अतः मिलान के लिए यत्नपूर्वक इनकी उपेक्षा करनी चाहिए। तथापि शुभ फलों की प्राप्ति के लिए। को नियमित रूप े। हनुमानजी की पूजा तथा मंगलवार का उपवा। करना श्रेष्ठ सिद्ध हो कता है।

संतान

संतति प्राप्ति के दृष्टि े। । और diya का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव े। उनको ति की प्राप्ति उचित मय पर होगी तथा इसमें किसी भी प्रकार का अनावश्यक विलम्ब नहीं होगा। ाथ ही बच्चों के मध्य जन्म का अंतर भी अनुकूल रहेगा जिससे उनके उचित पालन पोषण करने के लिए पर्याप्त अवसर मिलेगा। इसके अतिरिक्त इनकी कन्या तथा पुत्र ति की ख्या मान होगी।

प्रसव काल के प्रति diya के मन में अनावश्यक भय की भावना पहले े। ही विद्यमान रहेगी जिससे वे मानसिक रूप े। अशांति की अनुभूति करेंगी। अतः diya को चाहिए कि ऐसी भय की भावना को मन े। दूर करें क्योंकि उनका प्रसव बिना किसी विध्न या मस्या के म्पन्न होगा तथा किसी भी प्रकार े। प्रसूति बधी चिकित्सा की उनको अनावश्यकता नहीं होगी ाथ ही उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा ुदंर, स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में मर्थ रहेंगी। फलतः इससे ।। ससुर तथा पति उनसे प्रसन्न रहेंगे।

। और diya बच्चों की उन्नति व्यवहार कुशलता एवं बुद्धिमता े। प्रसन्न रहेंगे। ाथ ही माता पिता की इच्छा के विरुद्ध वे कोई भी कार्य नहीं करेंगे तथा उनके म्मान का हमेशा ध्यान रखेंगे। लेकिन माता की अपेक्षा पिता े। उनका विशेष लगाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा का पूर्ण पालन करेंगे। अतः। और diya का पारिवारिक जीवन ुख शांति तथा आनंद पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

diya के अपने ।। से ामान्य बध रहेंगे तथा परस्पर ामंजस्य े। मधुरता बनी रहेगी यद्यपि इनके मध्य यदा कदा विवाद या मतभेद उत्पन्न होंगे परन्तु उनका बुद्धिमता े। ामाधान करने में दोनों को फलता प्राप्त होगी। ाथ ही diya यत्नपूर्वक ।। की ुख ुविधाओं का ध्यान रखकर उनकी ेवा में तत्पर रहेंगी।

लेकिन सुर े। पूर्ण स्नेह एवं हानुभूति अर्जित करने में diya को कठिनाई का

सामना करना पड़ेगा तथा उनकी तरफ॰ ।मय ।मय पर ।मस्याएं उत्पन्न होगी। परन्तु ननद एवं देवरों॰ ।बधों में मधुरता रहेगी तथा उनका व्यवहार मित्रवत रहेगा फलतः उनसे पूर्ण स्नेह एवं ।हानुभूति प्राप्त होगी।

इ। प्रकार diya को ।सुराल में ।मान्य रूप॰ अनुकूल वातावरण मिलेगा तथा किंचित असुविधाओं का ।मना करके वह ।मंजस्य स्थापित करने में ।फल हो ।केंगी।

ससुराल-श्री

। तथा ।। के ।बधों में विशेष मधुरता का भाव नहीं रहेगा तथा आयु में काफी अंतर होने के कारण दोनों के मध्य वैचारिक मतभेद रहेंगे लेकिन इनमें अधिक गंभीरता नहीं रहेगी। यदि। तथा इनकी ।। आपसी ।मंजस्य तथा बुद्धिमता॰ व्यवहार करें तो ।बधों की मधुरता में वृद्धि हो ।कती है।

लेकिन ।सुर के ।थ में। के ।बध मधुर रहेंगे तथा उनके प्रति मान ।म्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा। ।थ ही उनसे पिता के ।मान ही व्यवहार करेंगे। ।थ ही वे भी। को पुत्रवत स्नेह तथा वात्सल्य प्रदान करेंगे।। समय ।मय पर अपने ।सुर॰ आवश्यक तथा बहुमूल्य ।लाह तथा निर्देश भी प्राप्त करते रहेंगे परन्तु ।ले तथा ।लियों के ।थ में ।बधों में तनाव तथा मतभेद रहेंगे तथा एक दूसरे के प्रति आलोचना तथा प्रतिद्वन्दिता का भाव रहेगा जिससे आप। में स्नेह ।हयोग तथा ।हानुभूति के भाव में न्यूनता रहेगी।

इ। प्रकार ।मान्य रूप॰ ।सुरालवालों का दृष्टिकोण। के प्रति अनुकूल ही रहेगा।